एक दिन भी जी मगर.....

गोपाल दास सक्सेना

<u>प्रस्तावाना:-</u>

गिरीषकुमार-बाबुगेनू-छोटू-राम- निसर्ग फूल- तितलियाँ- पुष्प की अभिलाषा

<u>कविता का स्पष्टीकरण:-</u>

<u>१.</u>

एक दिन जी मगर तू ताज बनाकर जी,

अटल विश्वास बनकर जी;

अमर युगगान बनकर जी!

आज तक तू समय के पदचिह्न-सा खुद को मिटाकर

कर रहा निर्माण जगाहित एक सुखमय स्वर्ग सुंदर,

स्वार्थी दुनिया मगर बदला तुझे यह दे रही है-

भूलता युगगीत तुझको ही सदा तुझसे निकलकर,

'कल' न बन तू जिंदगी का 'आज' बनाकर जी,

जगत-सरताज बनकर जी!

मनुष्य का स्वभाव- मानव को चाहिए कि वह प्रकृति तथा और मानवों के प्रति मन में कृतज्ञता रखें- जिनके कारण उसका जीवन सुखकर बन जाता है | पर व्यवहार में हम क्या पाते हैं? मानव किये-कराए उपकारों को भूल-सा जाता है- जान-बूझकर याद नहीं रखता है | यह "भूल जाना" ही भूतकाल है-"कल"है | पर वर्तमान की हर चीज को वह याद करता है | [अतः कवि चाहता है

कि हे मानव तू 'आज' बनकर जी! ताकि लोग तुझे याद करें-याद रखें-तुम्हारे अस्तित्व को समझें----------]

आज मनुष्य का जीवन व्यस्त-व्यग्र बन गया है |उसके पास समय नहीं है कि वह भूतकाल में झाँकें | अतः जी 'सामने' है बस वाही उसके मन में बीएस जाता है-बसा जाता है कुछ पलों के लिए !

२.

जन्म से उड़ रहा निस्सीम इस नीले गगन पर,

किन्तु फिर भी छांह मंजिल की पडती नहीं नयन पर,

और जीवनलक्ष्य पर पहुँचे बिना जो मिट गया तू-

जग हँसेगा खूब तेरे इस करूण असफल मरण पर,

ओ मनुज! मत विहंग बन आकाश बनकर जी,

अटल विश्वास बनकर जी!

(पंछी) विहंग- एक छोटा-सा जीव-जो अपने पंखों में ताकद भरकर खुले आकाश में लेता है |

'आकाश' एक अत्यंत विशाल, अमर्याद परन्तु काल्पनिक जगह है |

मात्र.....! पृथ्वी के गोलाकार होने के कारण हम एक वितान के रूप में उसे देखते हैं | चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र कि तारकामंडल और ग्रहों को हम आकाश में देखते हैं | एक छोटे से जीव पंछी की तुलना में आकाश बहुत ही- बहुत ही विशाल है |

कवि इसी कारण मनुष्य से कहता है कि तुम लघुजीव नहीं 'विशाल जीव' बनने के सपने देखो-पंछी नहीं- आकाश बनने के सपने देखो |

३.

एक युग से आरती पर तू चढ़ाता निज नयन ही,

पर कभी पाषाण क्या ये पिघल पाए एक क्षण भी,

आज तेरी दीनता पर पड रही नजरें जगत की,

भावना पर हँस रही प्रतिमा धवल, दीवार मत की,

मत पुजारी बन स्वयं भगवान बनकर जी !

अमर युगगान बनकर जी !

कई सालों से मनुष्य अपने से अलग किसी पत्थर की मूरत में ईश्वर के दर्शन करता आया है | फिर भी वह अपनी स्थिति को सुधर नहीं सका | उसकी दरिद्रता दूर न कर सका | अतः कवि इसी बात को उसकी 'भूल' कह रहा है | कवि कहता है- ईश्वर तुमसे अलग-तुमसे जुदा कही और जाकर नहीं बसता- वह तो तुममें खुद मौजूद है | तुम इसी बात को जान लो | कूद ईश्वर बनो और अपना विकास कर लो | "तुम्हीं तुम्हारे जीवन के शिल्पकार!"

उद्देश्य.

"खुदी को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बंदे से खुद पूछे, बता तेरी रज़ा क्या है "

जिन्दगी में कुछ बनने के लिए, कुछ करके दिखाने के लिए व्यक्ति को आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी होने की आवश्यकता होती है |

मुझे कुछ करना है- मैं बड़ा नाम करूँगा-कैसे? क्या अपने सपने सच्चाई में ब्द्मने की शक्ति में रखता हूँ? मैं जो कुछ सीखना चाहता हुन्न उसके लिए आबश्यक बुध्दिमानी मेरे पास है? प्रश्न!!!! प्रश्न !!!! डर!!!!!

इस स्थिति को बदलना है-आनेवाले दिनों में अगर मेरे देश को बलशाली बनाना है तो पहले मुझे बलशाली बनना होगा |

मन में कुछ अच्छे विचार आते हैं ऐसे समय यदि कोई दूसरा उन विचारों को दृढ़ करने का, पक्का करने का काम करता है,प्रेरणा देता है तो सोने पे सुहागा !!!!

कवि नीरज ऐसे बच्चों के लिए यह कविता लिखते हैं:-

<u>मूल्याकंन :-.</u>

१. अधोरेखित शब्द की जगह 'उचित' शब्द लिखकर वाक्य पुनः लिखिए:-

अ. जिन्दगी का --------- नहीं तू ------- बनकर जी |

आ.------ मत तू विहंग बनकर जी |

इ. -------- बनकर जी |

२. माखनलाल चतुर्वेदी की 'पुष्प की अबिलाषा' कविता पढ़ें |
क्या आपको इस कविया का फूल साधारण/असाधारण लगता है ? ५-६ प्रक्त्यों मरण तैयार करें | हमें mail करें |